आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

मुद्रण तारीख :- 22.09.2015 | अंक-289 | तारीख-23 सितम्बर, 2015, भाद्रपद शुक्ल पक्ष-10 | बुधवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मूल्य -1 रूपया | पृष्ठ -1

गजानन रखियो सबकी लाज।
हे गणपति हे विघ्न विनाशक
होवे सुफल सब काज
गजानन रखियो सबकी लाज ।
कोई माँगे रिध्दि सिध्दि
कोई चाहे शुभ लाभ
देना सबको विद्या बुध्दि
और सुमति के साज
गजानन रखियो सबकी लाज ।

दुःख के आने से पहले तैयारी करो

सुख दुःख दोनों में तैयार रहना चाहिए। हमारा अपना अज्ञान है इसलिए समझ में नहीं आता हमारे देश में चार–चार महीने में ऋतुएँ बदलती हैं। गर्मी जब समाप्त होती है तब वर्षा ऋतु से पहले छतरी तैयार कर डालों ऋतु से पहले ही स्वीकार करो बरसात आने वाली है। सुख आये इसलिए छतरी तैयार रखो। दुःख के आने की पहले तैयारी करों। तैयारी सम्पूर्ण हो तो दुःख अधिक त्रास नहीं होता। दृष्टि को बदलने की जरूरत है। सुख दुःख में दृष्टि ही बदलनी चाहिये।

हनुमान जी के बारह नाम

भरत चरन सिरू नाइ,
तुरित गयउ कपि राम पहि।
कहि कुसल जाइ,
हरषि चलेउ प्रभु जान चहि

अर्थात् :– हनुमानजी भरत जी के चरणों में सिर नवाकर तुरंत के पास गए और सब कुशल कही। तब प्रसन्न होकर प्रभु अयोध्या जाने के लिए विमान पर चढ़े।

1. अंजनी सुत
2. वायु–पुत्र
3. फाल्गुन सखा
4. महाबली
5. अमित विक्रम
6. सीताशोक विनासन
7. रामेष्ट
8. उदधि क्रमण
9. लक्ष्मण प्राणदाता
10. हनुमान
11. दशग्रीव दर्पहा
12. पिंगाक्ष

साइबर अपराधों से निपटने के लिए 500 करोड़ खर्च करेगी भारत सरकार

सरकार द्वारा साइबर अपराधों से निपटने के लिए 500 करोड़ रूपए की लागत से एक सेंटर बनाने की संभावना है. साइबर अपराधों में सालाना करीब 40 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है।

यह कदम एक विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट के बाद आया है. इस समिति की स्थापना देश में साइबर अपराधों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए खाका तैयार करने और उपयुक्त सुझाव देने के लिए की गई थी। समिति ने अपनी रिपोर्ट गृह मंत्री राजनाथ सिंह जी को सौंपी।

समिति ने सरकार को राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आईसीसीसीसी) स्थापित करने का सुझाव दिया है जिसकी सभी राज्यों में शाखाएं हों. आईसीसीसीसी की प्राथमिकताओं में से एक यह भी होगा कि भारत सरकार के आधिकारिक संवाद नेटवर्क में सेंध लगाने और उन्हें हैक करने के अंतरराष्ट्रीय गिरोहों के प्रयासों पर किस प्रकार काबू पाया जा सके।

समिति ने 'रोडमैप फार इफेक्टिवली टैकलिंग साइबर क्राइम्स इन दि कंट्री' शीषर्क वाली अपनी रिपोर्ट में विदेशी सर्वरों पर निर्भरता घटाने और सभी सरकारी संवाद के लिए एक विशिष्ट सुरक्षित गेटवे सुनिश्चित करने का भी सुझाव दिया।

गृह मंत्री ने संबंधित अधिकारियों को रिपोर्ट पर तत्काल विचार करने और उसे लागू करने को कहा. गृह मंत्रालय ने बाद में एक विज्ञप्ति में कहा कि मंत्रालय ने 24 दिसंबर 2014 को विशेषज्ञ समूह का गठन किया था।

स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर

नई दिल्ली में बना स्वामिनारायण अक्षरधाम मन्दिर एक अनोखा सांस्कृतिक तीर्थ हैं इसे ज्योतिर्धर भगवान स्वामीनारायण की पुण्य स्मृति में बनवाया गया हैं। यह परिसर 100 एकड़ भूमि में फैला हुआ हैं। दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मंदिर परिसर होने के नाते 26 दिसंबर 2007 को यह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्र्स में शामिल किया गया। इसमें दस द्वार हैं। ये द्वार दसों दिशाओं के प्रतीक हैं। जो कि वैदिक शुभकामनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं। भक्ति द्वार–यह द्वार पंरपरागत भारतीय शैली का हैं। भक्ति एवं उपासना के 208 स्वरूप भक्ति द्वार में मंडित हैं। मयूर द्वार भारत का राष्ट्रीय पक्षी मयूर, अपने सौन्दर्य, संयम और शुचिता के प्रतीक रूप में भगवान को सदा ही प्रिय रहा हैं। यहां के स्वागत द्वार में परस्पर गुंर्थ हुए भव्य मयूर तोरण एवं कलामंडित स्तंभों के 869 मोर नृत्य कर रहे हैं। यह शिल्पकला की अत्योत्तम कृति हैं। यह दुनिया का विशालतम हिंदू मन्दिर परिसर हैं। अक्षरधाम मंदिर 86342 वर्ग फुट परिसर में फैला हैं। यह 356 फुट लंबा 316 फुट चौड़ा तथा 141 फुट ऊंचा हैं।

अक्षरधाम मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक हैं। यह मंदिर दिल्ली में यमुना नदी के पास नोएडा मोड़ पर बना हैं। यह एक सांस्कृतिक मंदिर हैं इसलिए और मंदिरों की तरह यहां पूजा–पाठ नहीं होता हैं। इस मंदिर में कारीगरों की अदभुत कलाकारी का संगम देखने को मिलता हैं। प्रतिमाह हजारों भक्त इस मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं। भारत में आने वाले विदेशी पर्यटक भी प्रतिवर्ष हजारों की तादाद में इस मंदिर की कलाकृतियों को देखने के लिए आते हें। इस मंदिर का निर्माण भारती वास्तुकला को बेजोड़ नमूना हैं।

अक्षरधाम मंदिर में देखने योग्य बहुत सी चीजें हैं। एक बार जो व्यक्ति मंदिर में आता हैं तो उसकी मानमोहक छटा को देखते ही रह जाता हैं। अक्षरधाम मंदिर में परमात्मा के 24 केशव आदि स्वरूपों के दुर्लभ चतुर्भुज शिल्प, स्वामीनारायण की लीलाओं से अलंकृत घनश्याम मंडपम, इसके अतिरिक्त मंदिर में नीलकंठ मंडपम, सहजानंद मंडपम, स्वामिनारायण मंडपम आदि की कलाकृति देखने पर व्यक्ति मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह पाता हैं। इस मंदिर की उंचाई 141 फीट हैं, चौड़ाई 316 फीट हैं और लंबाई 356 फीट हैं। भगवान स्वामी नारायण की ऐतिहासिक कुमकम, चरणमुद्रा, माला, पादुका व उनके वस्त्र आदि इस अक्षरधाम मंदिर मं रखे गये हैं इस कारण भी इस मंदिर का महत्त्व और अधिक बढ़ गया हैं। मंदिर में पांच सौ मूर्तियां परमहंसों की बनी हुई हैं जो सेवा मुद्रा में खड़े हैं। इन मूर्तियों को देखकर व्यक्ति में सेवा की भावना जागृत होती हैं। भगवान स्वामीनारायण की पूरी जीवनी इस मंदिर में मूर्तियों के माध्यम से दिखाई गई हैं। मंदिर के चारों ओर बाहर की तरफ 108 गोमुख से पानी निकलता हुआ दिखाई देता हैं। मयूर द्वार मंदिर का स्वागत द्वार भी हैं। इस द्वार में परस्पर गूंथे हुए भव्य मयूर तोरण और सतंभों में 869 मयूर नृत्य कर रहें हैं। यह शिल्पकला का बहुत ही उत्तम नमूना हैं।

दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर में सस्कृति विहार में 12 से 14 मिनट का नौका विहार होता हैं। इस नौका का आकार मयूर के जैसा हैं। इस नौका विहार के माध्यम से 10,000 हजार वर्ष पुरानी भारतीय सभ्यता के दर्शन दर्शकों को होते हैं। इस नौका विहार के माध्यम से शून्य की गणनाएं गुरूत्वाकर्षण की खोज आदि के बारे में जानकारी मिलती हैं। नौका विहार के अतिरिक्त इस मंदिर में लाल पत्थरों से बना हुआ एक विशालतम कुण्ड हैं। यह कुण्ड प्राचीन भारतीय परम्परा को दिखाता हैं। 300 फीट लंबा यह कुण्ड भारत का सबसे बड़ा कुण्ड हैं। इस कुण्ड के माध्यम से जल, ज्योति ओर जीवन का अनोखा नजारा देखते ही बनता हैं। अक्षरधाम महालय के तीन ओर नारायण सरोवर की रचना की गई हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर में कमल के फूल के समान बना उद्यान हैं। जिसकी शोभा सभी के मन को लुभाती हैं।

सेवा–कार्य

दो अक्षों की संयुति है – सेवा। देखने सुनने में लघु यह शब्द अपने भीतर भावों का महोदधि समेटे हैं। यह शब्द समुद्र की गहराई से गहरा व पर्वतों के उतुंग शिखरों से ऊँचा भाव अपने में समाहित किये हैं। सामान्य परिभाषा में जनहित या परोपकार के समस्त कार्य जो समाज के लिये, व्यक्ति के लिये किये जाते हैं – सेवा की क्षेणी में आते हें, सामान्य हिन्दु के लिये तो यह आत्मकल्याण का मार्ग हैं। धर्माचार्यों ने सेवा को परम कार्य निरूपित करते हुए कहा हैं – नर सेवा–नारायण सेवा। अर्थात् सेवा ही ईश्वर प्राप्ति का सरलतम मार्ग हैं।

पंचामृत

1. हम भगवान के ही हैं।
2. हम जहाँ भी रहते हैं, भगवान के ही दरबार में रहते हैं।
3. हम जो भी शुभ काम करते हैं, भगवान का ही काम करते हैं।
4. शुद्ध–सात्त्विक जो भी पाते हैं, भगवान के ही प्रसाद पाते हैं।
5. भगवान के दिये प्रसाद से भगवान के ही जनों की सेवा करते हैं।

मंगल कलश की स्थापना

धर्मशास्त्रों में कलश को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और मातृगण का निवास कहा गया हैं। समुद्र मंथन से निकलने वाले अमृत को भी एक कलश में ही प्राप्त माना जाता हैं। ऋग्वेद में कहा गया हैं कि पवित्र जल से परिपूर्ण कलश देवराज इंद्र को सादर समर्पित हैं। मानव शरीर की कल्पना भी मिट्टि के कलश से ही की जाती हैं।

मछली दर्शन से कछुई ध्यान से और पक्षी स्पर्श से बच्चों को पालते हैं वैसे ही सज्जनों की संगति हैं।

संतरे के ये 7 फायदे जानकर आप भी खूब करेगें इसका सेवन

1. यह ताकत को बनाए रखने में भी संतरा कारगर हैं। इसमें मौजूद विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कि हड्डियों को मजबूत बनाता हैं।
2. किडनी की समस्याओं को भी दूर रखता हैं। रोजाना संतरे की जूस पीने से किडनी में पथरी होने का खतरा कम हो जाता हैं।
3. ये वजन कम करने में भी मददगार हैं। संतरे पूरी तरह से फाइबर से भरपूर होता हैं इसलिए इसको खाने से चर्बी कम होती हैं।
4. पोटेशियम की कमी से दिल की बीमारी अरथमिया होने का खतरा रहता हैं। लेकिन संतरे में पोटेशियम काफी मात्रा में होता हैं, जो इस बीमारी से बचाव करता हैं।
5. संतरा आंखो की रोशनी के लिए जड़ी–बूटी का काम करता हैं। संतरे का कार्टोनाइड आंखों के लिए गुणकारी हैं।
6. अगर आपको त्वचा को चमकदार और सुंदर बनाना हैं तो संतरे का सेवन करें। इसमें मौजूद बीटा कैरोटीन एक ताकतवर एंटीऑक्सीडेंट हैं जो त्वचा को जवां रखने में मदद करता हैं।
7. संतरे के उपयोग से त्वचा में चमक आती है।

मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

❁ प्रभु का प्रसाद है – नारायण सेवा ❁

डालिया नम गई कार्यकर्ता आ गई पौष्ठिक आहार बन गया खुशिया छा गई कमला जी गाडी में बैठे राम–राम–राम हरि ऊं माताजी प्रणाम बई–बई धोक देवे–बेटा–बेटा राम जी राम जी राम जी को काम करा रे। हे हमारे जी रघुनाि हम किस बात की चिन्ता और गाडी में बाई बिराज गई। हमारी आदरणीय जी कमला जी हमारे परम जीजा जी साहब उन्होंने 10 साल तक लगातार तन मन धन से सेवा की। 10 साल तक लगातार। सब कुछ छोडा सेवा की पधारो जिजाजी जीजी, कैलाश जी यही नक्शा है ये प्लानिंग है। क्या प्लानिंग बना सकते है। कलम कान पे ठंकी रह जाती है। घडी हाथ में लगी रह जाती है। और ईश्वर के यहां से संदेशा आता है चलो। एक सांस भी अगला नहीं मिलता है। दो मिनिट तो ठहर ईाये कुछ नहीं तेरा वारंट तो कट गया। बस मैं बैठे ड्राईवर साहब को कहा राम–राम लीजिए प्रसाद लीजिए आनन्द हे परमानन्द, बस स्टार्ट हुई की लगा की परमात्मा मिल गये। यही नक्शा है। अगर आनन्द इसी क्षण नहीं मिला तो आनन्द दो नहीं है जो अलमारी में रख देंगे और बाद में कमा लेंगे। कैसे समय का तिजोरी में नहीं रखा जा सकता है। ये आनन्द उसी क्षण का आनन्द होता है। आनन्द तो ब्याज के साथ मिल जाता है। अब बस रवाना हुई सेक्टर 4 पीएमटी कॉलोनी से विशणु शर्मा हितेशी साहब को लेना है। हितेशी पुस्तक भण्डार वो एक मिनिट में बस में आकर बैठ गये। अच्छे कार्य के लिए चल रहे है। उधर हमारे गुप्ता जी पत्रकार महोदय उधर हमारे उस समय शायद बंशी बोहेडा में है। बडी सादडी में रहने वाले है । भाई साहब वो बिराजे 6–7 साथी रास्ते में से लिये और वहां हितेशी भवन से आयुर्वेदिक कॉलेज अम्बा माता चले मल्ला तलाई और बस निकल गई थी।

क्रमशः अगले अंक में ...

क्या हैं फॉरेंसिक अकाउंटिंग

यह अकाउंटिंग की ही एक शाखा हैं, जिसमें कानून व्यवस्था से जुड़े मामलों को सुलझाने के लिए अकाउंटिंग के सिद्धान्तों के साथ ऑडिटिंग और जांच–पड़ताल के हुनर का इस्तेमाल किया जाता हैं। यह काम करने वाले पेशेवरों को फॉरेंसिक अकाउंटेंट कहा जाता हैं। वह अनुभवी ऑडिटर होते हैं और वित्तीय घपलों का पता लगाने के लिए किसी व्यावसायिक संस्थान (कंपनी, फर्म) के खातों (अकाउंटस्) पर निगरानी रखने का कार्य करते हैं। फॉरेंसिक अकाउंटिंग के लिए सबसे जरूरी होती है अकाउंटिंग की अच्छी जानकारी। इसके बाद ऑडिटिंग, रिस्क असेसमेंट और फ्रॉड डिटेक्शन (घपलों को पहचानना) आदि की व्यावहारिक समझ को इस पेशे में आवश्यक माना जाता हैं। इस पेशे से जुड़े लोगों को अपने अकाउंटिंक, ऑडिटिंग और खोजबीन के हुनर से आर्थिक घोटालों से संबंधित साक्ष्यों का विश्लेषण करके उनका अर्थ निकालना होता हैं। किसी मामले की अदालती कार्यवाही में वह बतौर विशेषज्ञ गवाह के रूप में भी योगदान दे सकते हैं। किसी कानूनी विवाद में लिप्त लोगों या फर्मों के मामले में फॉरेंसिक अकाउंटेंट की मुख्य भूमिका संबंधित वित्तीय रिकॉर्ड (दस्तावेज) की जॉच और उनका विश्लेषण करना होता हैं। इस कार्य के दौरान वह उन सबूतों का भी जुटाते हैं, जो जांच एजेंसियों को कानूनी प्रक्रिया मं मदद देते हैं। अपने पेशेवर जीवन में फॉरेंसिक अकाउंटेंट का अकाउंटेंट, डिटेक्टिव और लीगल एक्सपर्ट जैसी भूमिकाएं निभानी होती हैं। वह संदिग्ध लगने वाले वित्तीय दस्तावेजों की तलाश में रहते हैं, ताकि वह उन अपराधों का पर्दाफाश कर सकें, जिसमें कोई एक व्यक्ति या छोटे–बड़े व्यापारिक समूह संलिप्त हैं।

सम्पादकीय

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा एक अवसर आता है, जब उसकी सफलता का अवसर होता है, तथा इस सफलता के लिए सुरक्षित शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके बाद की जरूरत होती है कि उसकी सुरक्षित शक्ति कितने समय तक काम देती है। ऐसे अवसर भी आपके समक्ष जरूर आएंगे जब आपकी सफलता इस पर आश्रित होगी कि उस अवसर पर आप कितना संघर्ष कर सकते हैं, आप में कष्ट सहने की क्षमता कितनी है तथा आप संकट से निपटने की कितनी ताकत अपने अंदर रखते है?

मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव आते रहते है। छोटी अवस्था के दौरान उन्हें अपनी शक्ति की परीक्षा की आवश्यकता न थी, अतः वे अपनी शक्तियों का इस्तेमाल अनाप-शनाप करते रहे। युवावस्था में जब वे कर्मक्षेत्र में उतरे, उन पर जिम्मेदारी पड़ी, उनकी परीक्षा का असली समय आया, जब मंजिल पर एक और मंजिल डालने की आवश्यकता हुई, तो पता चला उनकी तो नींव ही कमजोर है। यदि शिक्षा, प्रशिक्षण एवं चरित्र की नींव सुदृढ़ है, तो व्यक्ति-रूपी भवन पर एक-के-बाद एक मंजिल बनाई जा सकती है और इसी प्रकार व्यक्ति का व्यक्तित्व ऊँचा उठता चला जाता है। लेकिन यदि नींव कच्ची हो तो कार्यक्षेत्र में उतरने के उपरान्त और मंजिल निर्माण नहीं की जा सकती। संकटकाल ही हमारी तैयारी की असली परीक्षा होती है। इसी दौरान आप जान पाते हैं कि आप किसी कार्य के योग्य हैं या नहीं।

प्रत्येक मनुष्य अवांछित समस्याओं को सुलझाने, अनापेक्षित प्रश्नों के उत्तर देने, संकट का मुकाबला करने के लिए समर्थ होना चाहिए। वास्तव में संकट, अप्रत्याशित घटना, अचानक आई विपत्ति ही परीक्षा की वह आग है, जिसमें व्यक्ति की योग्यता एवं सामर्थ्य की परीक्षा होती है। संकटों से लड़ने की या मुकाबला करने की सामर्थ्य सिर्फ पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त नहीं होती। जो मनुष्य बिगुल की आवाज सुनते ही न केवल तैयार मिलता है, अपितु वर्षों से संचित अपने शानदार प्रशिक्षण से, सतर्कता एवं सावधानी से तैयार मिलता है, संकट का मुकाबला करने के लिए सामर्थ्यवान के रूप में सम्मुख आता है, वह जीवन संग्राम में विजयश्री अवश्य प्राप्त करता है। यदि हम चाहते है कि अपने जीवन में आधिकाधिक प्रगति करें, आगे-ही-आगे बढ़ते रहें तो हमें अपने भीतर सुरक्षित शक्ति यानी रिजर्व पॉवर को एकत्र करना चाहिए, ताकि उसके बल पर हम जीवन में आने वाली मुसीबतों को डटकर सामना कर सकें, और अपने जीवन के पथ पर निरन्तर आगे-ही-आगे बढ़ते रहें।

जिंदगी से जंग जितेगा मासूम आरव

सेवा परमो धर्म ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क होगा जन्मजात दिल के छेद का ऑपेरशन

उदयपुर । श्री गंगानगर (राजस्थान) निवासी गणेश शर्मा के 2 वर्षीय पुत्र आरव शर्मा जिसकी खिलौने के साथ खेलने की उम्र थी, को दिल के छेद के ऑपरेशन के लिए सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर ने जयपुर स्थित नारायण सुपर स्पेस्लिटी हॉस्पिटल मे निःशुल्क ऑपरेशन के लिए सोमवार को भिजवाया है। पिता गणेश शर्मा अपने घर के 5 सदस्यों की जीविका आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण प्राइवेट टैक्सी चलाकर अपने परिवार का भरण पोषण कर रहे है। बच्चे की ऐसी गंभीर बीमारी एवं इलाज में 2 लाख 33 हजार के विशाल रकम ऑपरेशन खर्च आने के बाद पूरा परिवार सदमे मे था। कहते है भगवान के घर देर है, अंधेर नही। घर बैठे टीवी के माध्यम से जब उन्हें सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के निःशुल्क दिल के छेद के ऑपरेशन करवाने की जानकारी प्राप्त हुई तो परिवार आशावान होकर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल से उदयपुर आकर मदद की गुहार की। परिवार की आर्थिक स्थिति एवं गंभीर बीमारी देखते हुए अग्रवाल जी ने तुरन्त बच्चे को निःशुल्क ऑपरेशन हेतु जयपुर स्थित नारायण सुपर स्पेस्लिटी हॉस्पिटल भिजवाया। जहाँ आरव शर्मा के ऑपरेशन का सम्पूर्ण खर्च सेवा परमो धर्म ट्रस्ट द्वारा वहन किया जाएगा।

बोध-कथा मां ही मनुष्य की प्रथम गुरु

बंगाल प्रान्त के कलकता शहर में श्री विश्वनाथ दत्त अधिवक्ता थे। वे घोड़ा गाड़ी से न्यायालय आते जाते थे। उन दिनों घोड़ा गाड़ी आवागमन का मुख्य और प्रतिष्ठित साधन था। घोड़ा-गाड़ी चलाने वाला सारथि अपनी वेशभूषा और हाथ में चाबुक से रौबदार जान पड़ता था तथा बालकों के कौतुहल का विषय होता था। एक दिन विश्वनाथ जी ने अपने पुत्र नरेन्द्र नाथ से सहज ही पूछा कि तुम बड़े होकर क्या बनोगे? बालक नरेन्द्र भी अन्य बालकों की तरह सारथि के रौब से प्रभावित था, अतः उसने तत्काल उत्तर दिया। मैं सारथि बनना चाहता हूँ। इस पर पिता ने बालक की बात को सामान्य मानते हुए उस पर ध्यान नहीं दिया और चुप रहे।

नरेन्द्र की माँ ने बच्चे की बात को गंभीरता से लिया। उन्हें नरेन्द्र का यह विचार बहुत अच्छा लगा। वह बाल मन में भारतीय संस्कृति के उच्चादर्श स्थापित करना चाहती थी। मां नरेन्द्र को घर के दीवान खाने में लगे चित्र के सामने लेकर गई और सारथी कृष्ण की ओर संकेत करते हुए कहा, तू इनके जैसा सारथि बन। उक्त चित्र में महाभारत काल में अर्जुन का रथ पाण्डव और कौरव सेना के मध्य खड़ा था और सारथि कृष्ण, अर्जुन को गीता का उपदेश कर रहे थे। आगे चलकर यही बालक नरेन्द्र स्वामी विवेकानन्द के रूप भारतीय संस्कृति का सारथि बना। इसलिए हमारी संस्कृति में मनुष्य की प्रथम गुरू माँ को ही माना गया हैं।

इस मंदिर में चढ़ाई जाती हैं प्याज

देश में दिनोदिन बढ़ती मंहगाई से जहां जनता परेशान हैं, तो वही प्याज के बढ़े दामों ने भी रसोई का जायका बिगाड़ा हुआ हैं। आपको जानकर हैरानी होगी की राजस्थान के गोगामेड़ी स्थित गोगाजी और गुरू गोरखनाथ मंदिर में भगवान को प्रसन्न करने के लिए प्याज और दाल चढ़ाई जाती हैं। यहां प्याज और दाल का ढ़ेर लगा रहता हैं।

यहां के लोगों की मान्यता हैं कि प्याज व दाल चढ़ाने से यहां के देवता प्रसन्न होते हैं। सूत्र के अनुसार करीब एक हजार साल पहले यहां गोगाजी व मजमूद गजनवी के बीच युद्ध हुआ था। इस युद्ध में सहायता के लिए गोगाजी ने विभिन्न स्थानों से सेनाएं बुलाई थीं, जो अपने साथ भोजन के लिए प्याज और दाल लाए थे। इस युद्ध गोगाजी वीरगति को प्राप्त हुए। वापसी में जब सहायक सेनाएं अपने गंतव्य स्थान को वापस लौट रही थी तो लौटने से पहले बची हुई प्याज व दाल गोगाजी की समाधि पर अर्पित कर दी। तब से यह परंपरा हैं कि, जो भी भक्त गोगाजी के दर्शन करने आता हैं वह प्याज व दाल चढ़ाता हैं। भादों के महीने में यहां 15 दिन का मेला लगाया जाता हैं। इस मेले में करीब 40-50 लाख लोग दर्शन के लिए पहुंचत हैं।

इस प्रकार यहां पर सैकड़ों क्विंटल प्याज एकत्र हो जाता हैं, इसे बेचकर जो राशि प्राप्त होती है उस राशि से मंदिर में भण्डारा किया जाता हैं और गौशाला की देखरेख में इस राशि का प्रयोग किया जाता हैं।

दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं, ये सोचना छोड़िए

दूसरे आपके बारे में क्या सोच रहे हैं, इस बात के बारे में सोचते हुए आप अपना पूरा जीवन गुजार सकते हैं, लेकिन फायदा कुछ नहीं होगा। आप जंहा हैं, वही के वहीं रह जाएंगे। इसलिए दूसरे क्या सोच रहं हैं, इस बात की चिंता से बाहर आने के लिए इन कुछ बातों को रखिए याद-

1. जरूरी नहीं दो लोग जो भी बात कर रहे हैं, वे आपके बारे में हैं। समय-समय पर खुद को समझाते रहिए कि बाकी सब लोग, हर समय सिर्फ आपके बारे में ही बात नहीं कर रहे हैं। हर वक्त दूसरे को शक की नजर से देखने छोड़ दीजिए। खुद को परेशान करने से ज्यादा यह और कुछ नहीं हैं।
2. दूसरे आपके बारे में क्यों सोच रहे हैं, इस बारे में सोचते रहने से आप खुद का आगे बढ़ने से रोकते हैं। क्योंकि जिंदगी में आप जो कुछ बनेंगे, वे अपनी सोच के कारण होंगे। दूसरो की सोच के कारण नहीं।
3. इस बात को जानने का प्रयास कभी मत करिए कि दूसरे क्या सोच रहे हैं या किस बारे में बात कर रहे हैं। इन बातो का जीवन में कोई महत्व नहीं हैं। न ही इनसे जीवन में कोई बदलाव आएगा।
4. फोकस इस बात पर रखिए कि किन चीजों से बदलाव आता हैं? क्या बातें जरूरी हैं।
5. जहां तक आपकी सोच जाती हैं, वहां तक सोचना छोड़ दीजिए। आज में रहिए आज का सोचिए।

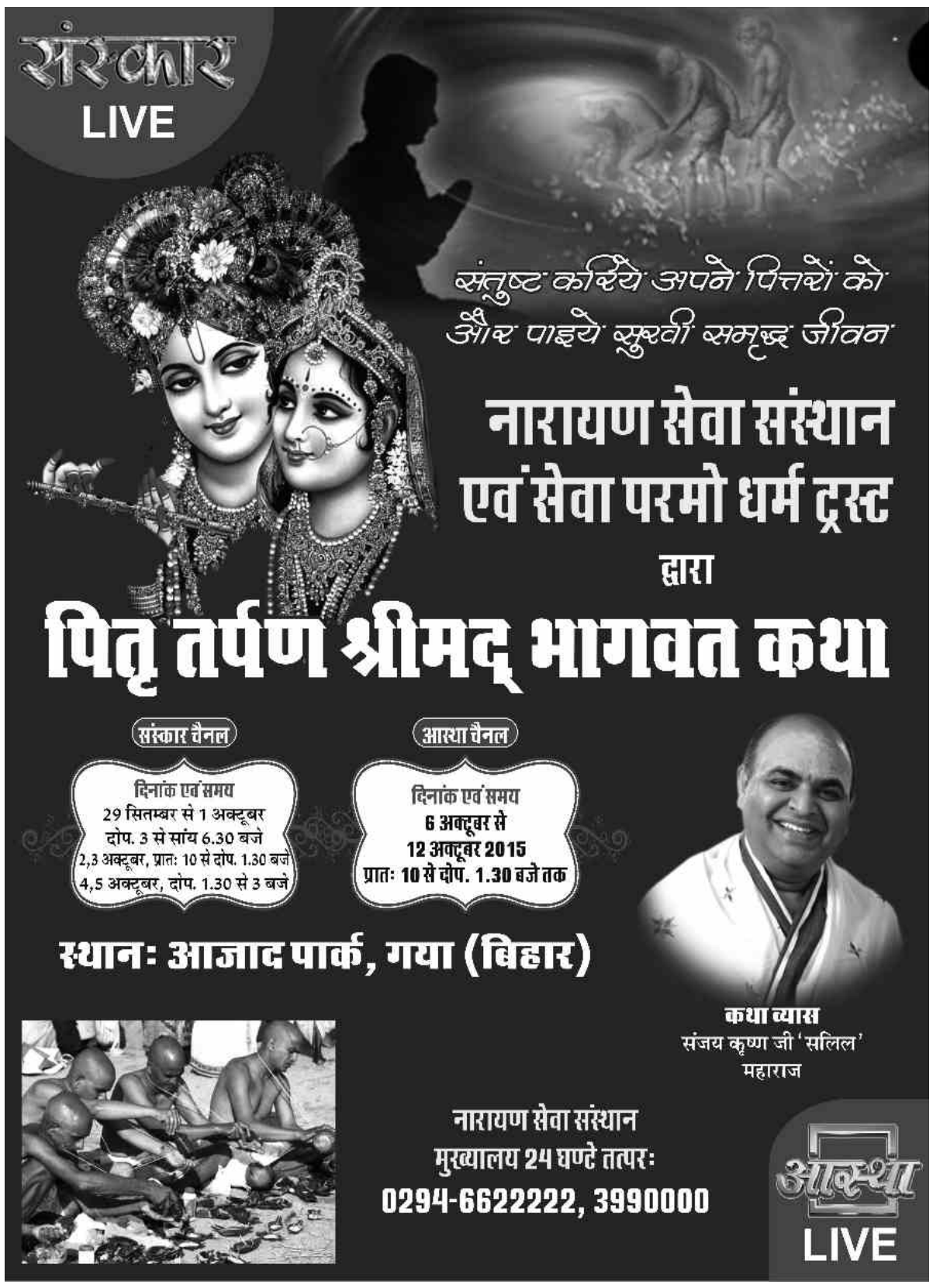

मुश्किल दिन को ऐसे बनाया जा सकता है सफल

बहुत बार हमें लगता हैं कि आज का दिन कितना मुश्किल या चुनौतीपूर्ण हैं। ज्यादा काम या तनाव के कारण ऐसा हो सकता हैं, लेकिन कुछ बातों को ध्यान में रखने से मुश्किल दिन को आसान या सामान्य बनाया जा सकता हैं, जानिए ऐसे कुछ साइन्स के बारे में.....

1. सबसे पहले जानिए कि आपका परफेक्ट दिन किस तरह का दिखता हैं या होता हैं। जब तक यही नहीं पता होगा कि परफेक्ट डे होता कैसा है तब तक किसी दिन को मुश्किल या आसान कहना गलत होगा।

2. जो सबसे जरूरी हैं, उस काम को सबसे पहले करने के लिए अपनी सोच को दृढ़ करिए। दिन की शुरूआत में मुश्किल कार्य करने से पूरा दिन आसान लगने लगेगा। जो चीजें बिल्कुल महत्वपूर्ण नहीं हैं, उन्हें बाह करते जाइए।

3. दूसरे से किए गए वादे जो आपको आपके लक्ष्य की ओर नहीं लेकर जाएंगे उन्हें वहीं के वहीं छोड़ दीजिए। ऐसे वादों का पूरा करने से कोई फायदा नहीं मिलेगा।

4. एक काम खत्म करने और दूसरे काम को शुरू करने के बीच थोड़ा गैप जरूर रखिए।

5. आपने एक दिन के लिए बहुत सारे कार्य लिख लिए हैं तो यह आपकी गलती हैं। उतने ही कार्य लिखिए जितने महत्वपूर्ण हैं। एक दिन में बहुत सारे कार्य लिख देने से भी दिन मुश्किल और लंबा लगने लगेगा।

6. हर दिन कुछ वक्त अपने लिए रखिए और एक डिस्ट्रेक्शन फ्री टाइम ब्लॉक बनाइए, जिससे कोई भी चीज आपकी एकाग्रता को भंग न करे।

7.एक वक्त पर एक ही कार्य करिए। इससे काम करने में आसानी होगी। अपना सर्वश्रेष्ठ की देंगे।

सत्य नारायण कथा का महत्व

वास्तव में सत्य ही नारायण हैं। सत्य को साक्षात् भगवान मानकर सत्यव्रत को जीवन में उतारना ही सत्यनारायण की कथा का मूल उद्देयय हैं। सत्यनारायण की कथा के माध्यम से मनुष्य सत्यव्रत ग्रहण करक वास्तविक सुख-समृद्धि का अधिकारी बन सकता हैं। इस कथा से एक संदेश स्पष्ट रूप से उभीारता हैं कि यदि मनुष्य अपने जीवन में सत्यनिष्ठा का व्रत अपना ले तो उसे इहलोक और परलोक दोनों में सच्चे सुख की प्राप्ति होती हैं। इसके विपरीत यदि मनुष्य सत्यनिष्ठा के व्रत का त्याग कर दे तो उसे अपने जीवन में और मृत्यु के उपरांत भी अनेक कष्टों को भोगना पड़ता हैं। अपने जीवन में सत्यव्रत को अपनाने वाला मनुष्य परमात्मा की कृपा से धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता हैं।

सत्य-विचार

''जीवन एक सत्य हैं। '' सत्य ही शिव हैं। व्यक्ति अपनी साख स्वयं कमाता हैं व गँवाता हैं। मंगलकारी जीवन का समग्र रूप सत्य हैं। कर्तव्य के प्रति समृद्धशाली बनो। विज्ञान की कसौटी पर धैर्य के साथ उतरो। सदा निरंकारी बनो, विश्व-प्रदातता की भाँति जीवन जीने के तरीको का अनुमोदन करे।

आज का युग सर्वागीण -विकास का युग हैं। हम सदा कार्यों के प्रति उत्तरदायी एवं उदारवादी दृष्टिकोण अपनावें जीवन मूल्यों को पहचाने व इसकी उपयोगिता में प्रयोग करे। जीवन एक संघर्ष की दासता हैं।

व्यक्ति का विकास गुणों की देन हैं। समता से समग्रता का पोषण होता हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी -कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक - प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र, चौबीसा
मार्गदर्शिका - कमला देवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक - सोहन लाल गाडरी
संपादक - लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी - घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमला देवी, मुद्रण स्थल-13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल-ई-डी-71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.) सम्पादक-लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.-09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com E-mail : mankijeet2015@gmail.com